विचार बिन्दु

अज्ञानी के लिए खामोशी से बढ़कर कोई चीज़ नहीं और यदि उसमे यह समझने की बुद्धि हो तो वह अज्ञानी नहीं रहेगा। –शेख सादी

प्रिंट मीडिया की प्रामाणिकता आज भी कायम

लगता है युवाओं ने प्रिंट मीडिया से अपनी दूरी बना ली है। आज बच्चों से युवाओं तक के हाथ में अख़बार या पुस्तक नहीं मिलती है। ये मोबाइल से लैस होते है। एक सर्वे के अनुसार आज भी अखबार 50 वर्ष से ऊपर के 72 प्रतिशत लोग पढ़ना पंसद करते हैं। 18-30 वर्ष के समाचार को 85 प्रतिशत युवाओं ने डिजिटल समाचार को चुना जिसमें न्यूज ऐप्स सोशल मीडिया ई पेपर इसके प्रमुख स्त्रोत है। युवाओं में डिजिटल की सुविधा है, मगर फेक न्यूज का खतरा भी सबसे ज्यादा वहीं है। सर्वे के मुताबिक डिजिटल मीडिया ने मजबूत जगह बना ली है, लेकिन प्रिंट मीडिया की पकड अब भी ढीली नहीं हुई है। मीडिया के बदलते स्वरूप के बावजूद आज भी प्रिंट मीडिया की प्रमाणिकता कायम है। युवा अपनी सुविधाओं के लिए डिजिटल उपयोग कर रहे है, जबकि अखबार की प्रमाणिकता आज भी कायम है। डिजिटल युग के तेज विकास के बावजूद प्रिंट माध्यमों का सामाजिक, शैक्षिक और बौद्धिक क्षेत्र में महत्त्व आज भी कायम है। समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें ऐसी विश्वसनीय सामग्री प्रदान करती हैं, जो गहराई और तथ्यों पर आधारित होती हैं।

आखिर यह प्रिंट मीडिया है क्या, इसकी जानकारी होनी जरुरी है। प्रिंट मीडिया मुख्य रूप से समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से समाचार बताने का मुद्रित संस्करण है। प्रिंट मीडिया वह मीडिया है जो हमें लिखित जानकारी देता है। आज का युवा अख़बार का मतलब मोबाइल ही समझता है। वह अख़बार के स्थान पर मोबाइल पर ख़बरें देखना ज्यादा पसंद करता है। पुस्तकों से भी उसने दूरी बना ली है। प्रिंटिंग प्रेस से पहले, ज्ञान मौखिक रूप से या महंगी हस्तलिखित पुस्तकों के माध्यम से फैलता था लेकिन अब प्रिंटिंग प्रेस ने लोगों को पहले से कहीं ज्यादा तेजी से शिक्षित करना संभव बना दिया। आज नए विचारों और ज्ञान को पुस्तकों या समाचार पत्रों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों के साथ साझा किया जा सकता है। प्रिंट मीडिया के प्रमुख साधनों में, दैनिक समाचार पत्र, पत्रिका, पुस्तकें, बैनर, होर्डिंग, पोस्टर,फ्लावर, लीफलेट न्यूज़लेटर्स और पोस्टकार्ड शामिल है।

अच्छी पुस्तकें पास होने पर उन्हें मित्रों की कमी नहीं खटकती है वरन वे जितना पुस्तकों का अध्ययन करते हैं । पुस्तकें उन्हें उतनी ही उपयोगी मित्र के समान महसूस होती हैं । पुस्तकें एक तरह से जाग्रत देवता हैं उनका अध्ययन मनन और चिंतन कर उनसे तत्काल लाभ प्राप्त किया जा सकता है । मनुष्य को प्रतिदिन सदग्रंथों का अवलोकन करना चाहिए। अच्छी पुस्तकें हमारा सही मार्ग प्रशस्त करती है और उत्तम जीवन जीने का सन्देश हमें प्रदान करती हैं । एक तरह से पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र और हितैषी होती हैं।

स्कूल और कॉलेज में लाइब्रेरी जरूर है, जहाँ अख़बार और पुस्तकें बहुतायत से सुलभ होती है मगर उसमें जाने का समय विद्यार्थी के पास नहीं है। कक्षा में विषयों के पीरियड अवश्य होते है खेलकूद का भी समय होता है मगर अख़बार या पुस्तक पढने अथवा पुस्तकालय का कोई पीरियड नहीं होता। अध्यापक भी बच्चों को अख़बार, पुस्तक या सद साहित्य पढने संबंधी कोई जानकारी नहीं देते। यही कारण है कि इन्टरनेट के इस युग में हम मुद्रित सामग्री को भूल गए है। पढने का मतलब इस संचार क्रांति में इन्टरनेट ही रह गया है युवा चौबीसों घंटे हाथ में मोबाइल लिए इन्टरनेट पर चोट करते मिल गाएंगे। वे पुस्तक से परहेज करने लगे है मगर मोबाइल को रिचार्ज करना नहीं भूलते। उन्हें घर या बाहर यह बताने वाला कोई नहीं है की अख़बारों और पुस्तकों का भी अपना एक संसार है। वे प्रेमचंद की किसी पुस्तक के बारे में नहीं जानते। कॉमेडियन कपिल के शो के बारे में जरूर जानते है मगर शरत चंद्र या हरिशंकर परसाई की किसी शख्शियत से वाकिफ नहीं है। उन्हें पुस्तक अथवा पुस्तक की महिमा से कोई लेना देना नहीं है। वे पुस्तक मेले में जाना नहीं चाहते। वे किसी अच्छे मॉल में जरूर जाना चाहते है जहाँ उन्हें अपनी मन पसंद खाने-पीने और पहनने की वस्तु मिल जाये। वे टीवी जरूर खोलते है मगर न्यूज़ चैनल नहीं देखते। या तो स्पोर्ट्स चैनल खोलेंगे अथवा कोई सीरियल या फिल्म देखना पसंद करेंगे। ओ है। टीटी प्लेटफॉर्म पर जरूर जायेंगे। न्यूज़ से अपना कोई वास्ता नहीं रखेंगे। न्यूज़ केवल वे ही देखेंगे जो किसी कॉम्पिटिशन की तैयारी में जुटे है।

जमाना जिस तेजी से बदल रहा है उसे देखते हुए लगता है किताब अब गुजरे जमाने की चीज रह जाएगी अब उन्हें कौन समझाएं की उसके अभिभावक पुस्तक के ज्ञान को सहेज कर आगे बढे है। अब तो गली मोहल्ले में कोई वाचनालय या पुस्तकालय भी नहीं है। जहाँ शांति से बैठकर पढा जाये। यदि कहीं ऐसी जगह भूल से मिल भी जाये तो उनका मोबाइल उसे पढने नहीं देगा। आखिर वह कैसे पुस्तक के बारे में कैसे जाने औए ज्ञान प्राप्त करें।

पुस्तक या किताब लिखित या मुद्रित पेजों के संग्रह को कहते हैं। पुस्तकें ज्ञान का भण्डार है । पुस्तकें हमारी दुष्ट वृत्तियों से सुरक्षा करती हैं । इनमें लेखकों के जीवन भर के अनुभव भरे रहते हैं । यदि कोई परिश्रम करे और अनुभव प्राप्त करने के लिए जीवन लगा दे और फिर उस अनुभव को पुस्तक के थोडे से पन्नों में दर्ज कर दे तो पाठकों के लिए इससे ज्यादा लाभ की बात क्या हो सकती है । अच्छी पुस्तकें पास होने पर उन्हें मित्रों की कमी नहीं खटकती है वरन वे जितना पुस्तकों का अध्ययन करते हैं । पुस्तकें उन्हें उतनी ही उपयोगी मित्र के समान महसूस होती हैं । पुस्तकें एक तरह से जाग्रत देवता हैं उनका अध्ययन मनन और चिंतन कर उनसे तत्काल लाभ प्राप्त किया जा सकता है । मनुष्य को प्रतिदिन सदग्रंथों का अवलोकन करना चाहिए । अच्छी पुस्तकें हमारा सही मार्ग प्रशस्त करती है और उत्तम जीवन जीने का सन्देश हमें प्रदान करती हैं । एक तरह से पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र और हितैषी होती हैं । हमारे जीवन को महत्वपूर्ण बनाने में पुस्तक का सबसे ज्यादा योगदान होता है। तकनीक ने भले ज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी है, पर पुस्तकें आज भी विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम हैं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 11 अप्रैल, 2026

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2083, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दिन 1:40 तक, सिद्ध योग सायं 6:39 तक, तैतिल करण दिन 11:57 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 1:40 से सूर्योदय तक है। आज शनि उदय पूर्व में रात्रि 12:05 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:45 से 9:20 तक, चर 12:28 से 2:02 तक, लाभ-अमृत 2:02 से 5:11 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:11, सूर्यास्त 6:45

मेष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कन्या

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में वाणी की कटुता के कारण वाद-विवाद हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क

परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मीन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

महात्मा ज्योतिराव फुले: भारत के दिव्य पथ-प्रदर्शक

महान समाज सुधारक महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्म चिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

आज 11 अप्रैल हम सभी के लिए बहुत विशेष दिन है। आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की जन्म-जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके 200वें जयंती वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है। महान समाज सुधारक महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्म चिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। महात्मा फुले को केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्मविश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव हम आज भी महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

महात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ। लेकिन शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए, न कि उन्हें अनदेखा करना चाहिए। बचपन से ही महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वो कहते भी थे, हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है। साफ है कि बचपन से मिली जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही।

महात्मा फुले के जीवन में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण मिशन बनी। उनका मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है, जिसे सभी के साथ साझा किया जाना चाहिए। जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब उन्होंने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वे कहते थे, बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं। उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बनाया।

शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण हमें आज भी बहुत प्रेरित करता है। पिछले एक दशक में भारत ने युवाओं के लिए रिसर्च और इनोवेशन को बहुत प्राथमिकता दी है। एक ऐसा इकोसिस्टम बनाने का प्रयास किया गया है, जिसमें युवा सवाल पूछने, नई चीजें सीखने और इनोवेशन के लिए प्रेरित हों। ज्ञान, कौशल और अवसरों में निवेश करके भारत अपने युवाओं को देश की प्रगति का आधारस्तंभ बना रहा है। अपने शैक्षिक ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वे कहते थे कि किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है। उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इसलिए उन्होंने गरीबों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए भी हरसंभव प्रयास किए।

महात्मा फुले ने कहा था, **''जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिळत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिळत नाही''**–यानी जब तक समाज के सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इसी विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्यशोधक समाज, आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा था। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर आवाज बना। यह आंदोलन उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि समाज की मजबूती के लिए न्याय, हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और सामूहिक प्रगति जरूरी है। उनका व्यक्तिगत जीवन भी साहस की मिसाल रहा। लगातार लोगों के बीच रहकर काम करने का असर उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा। लेकिन गंभीर बीमारी भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकी। एक गंभीर स्ट्रोक के बाद भी उन्होंने अपना काम और समाज के लिए संघर्ष जारी रखा। उनका शरीर कमजोर हुआ, लेकिन समाज के प्रति उनका समर्पण कभी नहीं डगमगाया। आज भी करोड़ों लोग उनके जीवन के इस पहलू से प्रेरणा लेते हैं।

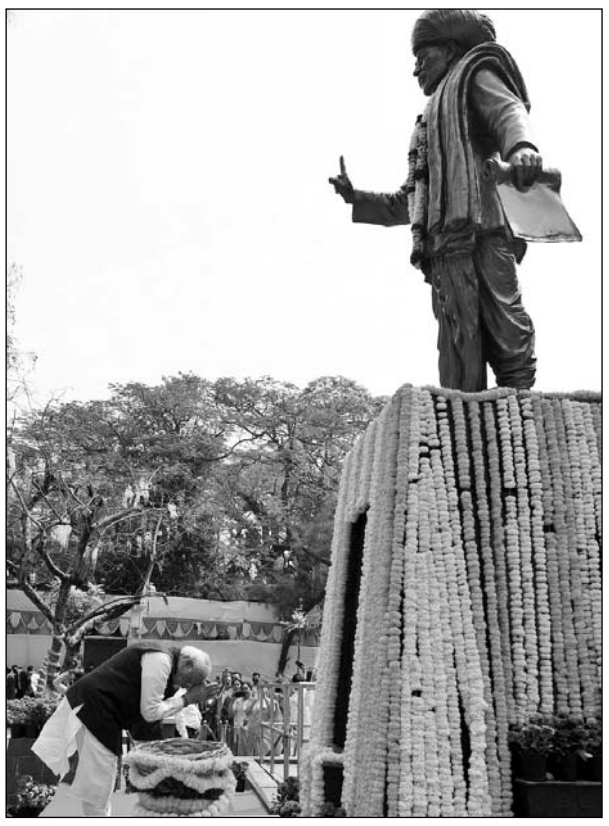

महात्मा फुले का स्मरण, सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है। वह स्वयं भारत की महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में बेहद अहम भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इस कार्य को जारी रखा। 1897 में प्लेग महामारी के दौरान उन्होंने मरीजों की इतनी सेवा की कि वह स्वयं भी इस बीमारी की शिकार हो गईं और उनका निधन हो गया। भारतभूमि बार-बार ऐसी महान विभूतियों से धन्य होती रही है, जिन्होंने अपने विचार, त्याग और कर्म से समाज को मजबूत बनाया है। उन्होंने बदलाव का इंतजार नहीं किया, बल्कि स्वयं बदलाव का माध्यम बने। सदियों से हमारे देश में समाज सुधार की आवाज उन्हीं लोगों से उठी है, जिन्होंने पीड़ा को भाग्य नहीं माना, बल्कि उसे खत्म करने के प्रयासों में जुटे रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे।

मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने शहर में महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके 200वें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा और यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से ही खुद को बेहतर बना सकता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले 200 साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं।

–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ।

महिलाओं की शिक्षा के प्रेरणा पुंज 'ज्योतिबा फुले'

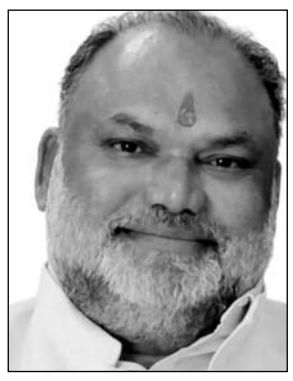

डॉ. मनोज कुमार बहरवाल

विद्या बिना मति गयी मति बिना नीति गयी,
नीति बिना गति गयी, गति बिना वित्त गया,
वित्त बिना शूद्र गये, इतने अनर्थ एक अविद्या ने किये!

ज्योतिबा फुले का यह ध्येय वाक्य मानव जाति के सांगोपांग विकास का मन्त्र है। व्यक्ति हो अथवा समाज या राष्ट्र अथवा विश्व सभी के सर्वांगीण विकास में ज्योतिबा फुले के यह विचार आज भी प्रासंगिक हैं। 11 अप्रेल 1827 को पुणे में एक व्यक्ति का जन्म हुआ जिसे महात्मा ज्योतिबा कहा गया। फुले नाम इस कारण पड़ा कि उनका परिवार फूल माली का काम करता था। वे सतारा से पूना आकर बसे थे। बाल्यकाल में ही आपकी माता जी का निधन हो गया। आपका पालन-पोषण एक बाई ने किया। आपने प्रारम्भिक शिक्षा मराठी माध्यम से की। कुछ विकट परिस्थितियों के कारण अध्ययन बीच में ही छोड़ना पड़ा। शिक्षा की लगन और महत्व के कारण 21 वर्ष की आयु में ज्योतिबा ने कुछ समय पहले तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढाई छूट गई और बाद में 21 वर्ष की आयु में अंग्रेजी माध्यम से 7 कक्षा की पढाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र फुले दम्पति ने बहुत काम किया और कर्मठता से समाज की सेवा की।

महात्मा जी ने मिलकर विधवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए अथक कार्य किया। इसके साथ ही किसानों की दयनीय दशा सुधारने और उनके कल्याण के लिए भी अथक प्रयास किये।

स्त्रियों की शैक्षणिक दशा सुधारने और महिला शिक्षा उन्नयन के लिए फुले ने 1848 में एक पाठशाला का शुभारम्भ किया। यह भारत की प्रथम बालिका पाठशाला थी। तत्कालीन समाज इतना जड़ बुद्धि था कि इन लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह काम करके अपनी पत्नी सावित्री फुले को इस योग्य बना दिया। कुछ लोगों ने आरम्भ से ही उनके काम में बाधा डालने की चेष्टा की, किंतु जब फुले आगे बढ़ते ही गए। तत्कालीन पुरातनपंथी समाज के लोगों ने उनके पिता पर दबाब डालकर पति-पत्नी को घर से निष्काषित करवा दिया। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत! इस वाक्य का प्रतिबिम्ब रहे महात्मा फुले। थोड़े समय के लिए बालिका शिक्षा का कार्य अवरुद्ध रहा। परन्तु फुले ने हिम्मत नहीं हारी अपने अथक प्रयासों से उन्होंने शीघ्र ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल ओर प्रारम्भ किये।

भारत के सभी संतों की व्यक्तित्व और कृतित्व का गहन अध्ययन ज्योति बा ने किया और उन सभी ज्ञानात्मक पक्ष को सभी के सामने प्रस्तुत किया। संतों के दार्शनिक अध्ययन के बाद आपको यह तात्विक ज्ञान मिला कि जब ईश्वर के सामने सब नर-नारी समान हैं तो उनमें ऊँच-नीच का भेद क्यों होना चाहिए? निर्धन तथा निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। आपकी निर्धनों के प्रति और निर्बलों के प्रति समाज सेवा की सच्ची भावना को देखकर 1888 में मुम्बई में एक सभा में आपको महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया।

ज्योति बा ने पुरोहित पंथी का विरोध किया ब्राहमणवाद का विरोध किया और इनके बिना ही शादी ब्याह करवाए और उनके इस कार्य को मुम्बई उच्च न्यायालय ने मान्यता प्रदान की। आपने बड़ी ही बुलन्द आवाज से बाल विवाह का विरोध किया और विधवा विवाह का समर्थन भी किया। आपने अनेक पुस्तकों जैसे कि गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, राजा भोसला का पखड़ा, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत आदि-आदि। आपने किसानों के हित में संघर्ष किया और आपके अथक प्रयासों के कारण ही तत्कालीन सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पारित किया। धर्म, समाज, और आडम्बरों के सत्य को वे समाज के सामने लेकर आए।

फुले के शैक्षणिक संघर्ष और उनकी महिलाओं के प्रति दूरगामी दृष्टि को देखकर तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार ने 1883 में आपको 'स्त्री शिक्षण के आद्यजनक' समान सूचक शब्दों से उनका सम्मान किया और उनके गौरव में वृद्धि की। वर्तमान में भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर राजनैतिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में महिलाएं जो नेतृत्व कर रहीं हैं यह सभी की प्रेरणा के पुन्ज महात्मा ज्योति बा फुले ही हैं।

आइए आज के इस पावन जन्म जयंति के अवसर पर हम सभी महात्मा फुले से प्रेरणा लेते हुए महिला / बालिका शिक्षा और उनके सर्वांगीण विकास और कल्याण के लिए पूरे मनोयोग से संकल्प लें और सदैव महिलाओं के विकास और कल्याण के लिए व्यक्तिगत और सामुदायिक प्रयास करें। यही है हमारी और हम सभी की भारतीय संस्कृति। यही हमारी और आपकी तथा हम सभी की पहचान और शक्ति बने यही भाव हम सभी में जाग्रत हो। आप सभी को महात्मा ज्योति बा फुले की जन्म जयंती पर आप सभी को मंगलकामनाएं।

–डॉ. मनोज कुमार
बहरवाल, प्राचार्य, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

महात्मा ज्योतिबा फुले : युग प्रवर्तक समाजोद्धारक

11 अप्रैल : महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती पर विशेष.....

डॉ. अरुणा व्यास

आज ज्योतिबा फुले जयंती है। ज्योतिबा का अर्थ होता है, ज्ञान का प्रकाश। ज्योतिबा फुले ऐसे ही थे। प्रकाश की लौ समान उन्होंने समाज को अपने विचारों से, अपने कार्यों से सदा उजास दिया। उनके नाम के आगे महात्मा लगता है। महात्मा का अर्थ होता है, महान आत्मा। ज्योतिबा फुले ने मनसा, वाचा और कर्मणा सदा महानता को जिया। इसीलिए उन्हें देश के महान समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक और दार्शनिक के रूप में स्वीकारा गया।

यह महात्मा ज्योतिबा फुले ही थे, जिन्होंने निर्धन तथा निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना कर क्रांति का सूत्रपात किया। समाजसेवा के उनके आदर्श आचरण को देखकर ही 1888 में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हें महात्मा की उपाधि दी गई। ज्योतिबा फुले कर्म में विश्वास करते थे। महिलाओं व पिछडे और अछूतो के उत्थान के लिये जीवन पर्यन्त उन्होंने कार्य किया। समाज में स्त्रियों की शिक्षा की उन्होंने अलख जगाई। स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्रदान करने के साथ उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया। विधवा विवाह का समर्थन किया और समाज की कुप्रथाओं और अंधश्रद्धा के प्रति लोगों को जागरूक किया। ऐसे दौर में जब स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। ज्योतिबा फुले ने कन्याओं के लिए देश की पहली पाठशाला पुणे में स्थापित की। उन्होंने 1848 में कन्या स्कूल खोला। लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह काम करके अपनी पत्नी सावित्री फुले को इस योग्य बना दिया। कुछ लोगों ने आरम्भ से ही उनके काम में बाधा डालने की चेष्टा की, किंतु जब फुले आगे बढ़ते ही गए तो उनके पिता पर दबाब डालकर पति-पत्नी को घर से निकलवा दिया। इससे कुछ समय के लिए उनका काम रुका अवश्य, पर शीघ्र ही उन्होंने एक के बाद एक बालिकाओं के तीन स्कूल खोल दिए।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को स्वयं शिक्षा प्रदान की। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला अध्यापिका थीं। विधवाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए भी उन्होंने बहुत काम किया। इसके अलावा किसानों की हालत सुधारने और उनके कल्याण के लिए भी निरंतर प्रयास किए। ऐसे महात्मा ज्योतिबा फुले के कार्यों से हम-सभी को प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। ज्योतिबा फुले ने जाति आधारित भेदभाव के समापन के लिए आजीवन लड़ते रहे। यह ऐसे ही नहीं हुआ। असल में वर्ष 1848 में उनके साथ एक ऐसी घटना घटी जिसने उन्हें झकझोर दिया। वह अपने एक मित्र के विवाह में शामिल होने के लिए गए थे। मित्र उच्च कुल का था और विवाह समारोह में उनके साथ अपमानित व्यवहार हुआ। उन्होंन तभी तय कर लिया जाति व्यवस्था की इस कुप्रथा को वह जड़ से समाप्त करेंगे। यही बाद में हुआ भी। उन्होंने शुरुआत कहीं और से नहीं अपने ही घर से की। दलितों को अपने घर के कुंए को प्रयोग करने की अनुमति दे दी। दलितों और महिलाओं में अंधविश्वास के कारण उत्पन्न हुई आर्थिक और सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए भी उन्होंने आंदोलन चलाया। उनका मानना था कि यदि आजादी, समानता, मानवता, आर्थिक न्याय, शोषणरहित मूल्यों और भाईचारे पर आधारित सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना है तो असमान और शोषक समाज को उखाड़ फेंकना होगा।

ज्योतिबा फुले युग से आगे की सोच रखते थे, इसीलिए महिला सशक्तीकरण को उन्होंने सबसे अधिक प्रधानता दी। विधवा विवाह का समर्थन किया। इसी संदर्भ में उन्होंने 1854 में विधवाओं के लिए एक आश्रम भी बनवाया। इसी तरह कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए नवजात शिशुओं के लिए भी एक आश्रम खोला।

महात्मा ज्योतिबा फुले

–डॉ. अरुणा व्यास,
पर्यावरण, शिक्षा और और संस्कृति अध्येता